['डॉ रमाशंकर शुक्ल रसाल' तथा 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन' ने इस काल को 'कलाकाल' नाम दिया है। उनका कहना है कि इस काल की कविता में भाव पक्ष की अपेक्षा कला पक्ष की ही प्रबलता है। साथ ही काव्य कला की दृष्टि से उत्तम कोटि का बन सका है। अत: इसे कलाकाल कहना भी अनुचित नहीं है। इस प्रकार इस काल के लिए उपरोक्त तिनों नाम सार्थकता होते हुए भी रीतिकाल नाम ही अधिक उपयोगी प्रतीत होती है। [क्योंकि 1 (इस काल में रीतिबद्ध आचार्य, कवियों की रचनाओं की संख्या रीतिमुक्त कवियों की रचनाओं की संख्या की तुलना में बहुत अधिक है) 2 (इस काल के प्राय: सभी कवियों के रीति-सिद्धांतों को लक्ष्य में रखकर ही शृंगार रस के उदाहरणों का निर्माण किया है। इसलिए इस काल का नाम रीतिकाल ही उचित है और प्रचलित है।]

Date/21/12/2017

Q. रीतिकाल के विभिन्न काव्य धाराओं का वर्णन कीजिए। R. ○

Answer => रीतिकाल के सम्पूर्ण काव्य को तीन भागों में बांटा गया है :—

नहीं हो पाया है॥ साथ ही रीतिकाल में श्रृंगार के अतिरिक्त भक्ति, वीररस, नीति आदि की कविता भी प्रयाप्त मात्रा में हुई और इस भी इस नाम में समावेश नहीं होता।]

[रीतिकाल के निर्धारित युग को डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'श्रृंगार काल' नाम दिया है। उन्होंने इस नामाकरण में प्रवृत्तियों तथा वर्ण्य विषयों का भी ध्यान रखा है इस काल के ग्रंथों में काव्य के विभिन्न तत्वों का जितना भी विवेचन हुआ और उसके उदाहरण के लिए जितनी भी काव्य-सामग्री प्रस्तुत की गई है उसका एक मात्र लक्ष्य श्रृंगार ही है।] [इस काल में रीति की बंधी-बंधाई परिपाटी का अनुकरण न करने वाले स्वच्छंदवादी कवि भी (घनानंद, बोधा, ठाकुर, आदि) प्रेम भावना का ही वर्णन करते थे। इस प्रकार इस नाम के अंतर सभी कवियों का समावेश हो जाता है॥ साथ ही शुक्ल जी को रीतिकाल का उपविभाग करने का कोई उचित आधार भी नहीं मिला था, जबकि विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसके दो उपविभाग भी प्रस्तुत किए हैं। —
रीतिबद्ध, रीतिमुक्त।]

(Sing Sir) (Long question) (Date/20/12/2017)

Q 1/ रीतिकाल के नामाकरण की सार्थकता पर विचार कीजिए। R.O

Answer => हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों के नामाकरण के लिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है कि किसी काल का उपयुक्त नामाकरण करते हुए (1) तत्कालीन प्रमुख प्रवृतियों को, तथा (2) विशेष ढंग की रचनाओं की प्रमुखता को ध्यान में रखना चाहिए। इसी आधार पर शुक्ल जी ने दो सौ वर्ष के इस काल का नाम 'रीतिकाल' निश्चित किया था। यह नाम यद्यपि हिन्दी साहित्य के इतिहास में व्यापक रूप से प्रयुक्त होता है। फिर भी इसे सम्पूर्ण दोष रहित नहीं माना जा सकता। यह केवल तत्कालीन प्रवृति विशेष का ही सूचक है। शुक्ल जी के अनुसार ही इस काल में सतावन (57) कवियों का वर्णन तो 'रीति ग्रंथकार' के रूप में हुआ है। और बयालीस (42) कवियों को 'रीतिकाल के अन्य कवि' कहा गया है। इस प्रकार इस नाम से पहले सतावन कवियों का ही समावेश समावेश होता है। और बयालीस कवियों को समेट लेने की इस नाम से व्यापकता नहीं है साथ ही इन सतावन कवियों में घनानन्द, बोधा, ठाकुर जैसे प्रधान कवियों का भी समावेश